3. नौटंकी शैली की दृष्टि से ' सुल्ताना डाकू' की अभिनेयता पर प्रकाश डालिए। 10

अथवा

'सुल्ताना डाकू एक सामाजिक नाटक है .' कथन के आधार पर कथानक की समीक्षा कीजिए।

4. 'बिदेसिया' में वर्णित पलायन की समस्या आज भी प्रासंगिक है। स्पष्ट कीजिए। 10

अथवा

मंचन की दृष्टि से 'बिदेसिया' की समीक्षा कीजिए ।

5. 'सत्यवान सावित्री' सांग की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। 10

अथवा

'राजयोगी भरथरी' की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **4308** **HC**

Unique Paper Code : 12057607

Name of the Course : **B.A.(Hons.) Hindi CBCS-DSE**

Name of the Paper : Lok Natya (HDSE-A)

Semester : VI

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

छात्रों के लिए निर्देश :

(इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें)

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×3=30

(क) पिया मोर गइलन परदेस, ए बटोही भइया !
रात नाहीं नींद दिन तनी ना चएनवाँ, ए बटोही भइया,
सहतानी बहुते कलेस, ए बटोही भइया !
रोवत-रोवत हम भइलीं पगलिनियाँ, ए बटोही भइया,
एको न भेजवलन सनेस, ए बटोही भइया !

नाहके जवानी हम के दिहलन बिधाता , ए बटोही भइया ,
कछु दिन में पाकी जइहन केस ,ए बटोही भइया !

अथवा

अइलऽ कलकातावा त खतवा भेजइतऽ ताबर हो तोर।
रोपेया भेजइतूऽ मनीआडर से ,गइयां में होइत हो सोर।।
रोपेया खोंइछवा में लेइ कर , गुनवाँ गइती हो तोर।
दुअरा पर रहितऽ तकेहू नाहीं देखित करिया –गोर।।
सुनरी का लोरवा से चुनरी होखत बा सर हो बोर।
कहत भिखारी चेतूऽ अबहूँ से, करत बानी निहोर।।

(ख) नीति और वेदांत शास्त्र कुछ ज्योतिषि का ज्ञान भी हो।
तुरंग भजावै भाल चढ़ावे कुछ मलखम्भ बलवान भी हो।
नृत्य कला और गदा घुमावै चौदा विद्या निदान भी हो।
वस्त्र पहरै शास्त्र लावै छोटे- बड़े का मान भी हो।
पैर पद्य माथे मैं मणि मनै गोड्याँ तक कर चाहिए।

अथवा

ऋषि मुनि सन्यासी योगी काल कै ताल नहीं सै।
काल छली को जीत सकै कोए इंद्रजाल नहीं सै।
पैदा हो, हो रोज मरण की आछी आल नहीं सै।
कल्पित जीव नै सदा रहण की बिल्कुल टाल नहीं सै।
लख्मीचंद कोए माल नहीं सै जो गांठ बांध के लेरा।

(ग) जागो हे सतगुरु का डेरे जानो हे
सच्चा सत गुरु निर्मल गंगा जिनमे मल-मल न्हानो हे।
बिन सतगुरु के कोन बतावे मुक्ति पंथ ठिकानो हे।।
अलख निरंजन नाम जपीने, जोगी भेस निभानो हे।
ब्राह्म नाम बानो पेरीने, घर–घर अलख जगानो हे।।
'सिद्धेश्वर' सेवा कर गुरु की , मुक्ति पद को पानो हे।।

अथवा

भरतरी : भेद भरी चोपड़ की चल के , दो राणी समजाय।
मन की बात मन में तम राखो , म्हारी समज नी आय।
पिंगला : सत्त धरम की चोपद ऊपर , काम क्रोध की गोट।
प्रेम से पासा फेंको पियाजी , चले चोट पे चोट।
भरतरी : तू राणी रंग मेल में राजी , करे रंगीली बात।
राज काज को काम पड्योहे , फिकर होए दिन रात।

2. लोकनाट्य परम्परा के सन्दर्भ में ' रासलीला ' के उद्भव और विकास को रेखांकित कीजिये। 15

अथवा

"माच" का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी परम्परा की विवेचना कीजिए